काव्यशास्त्रों में शब्दालङ्कारों का अध्ययन

सविता सिंह*

साहित्य जगत में कविवाणी का वह सौन्दर्यसाधन जो काव्य में लावण्य की सृष्टिकर उसे अनुभूतिपरक बनाता हो, अलङ्कार कहलाता है। काव्यशास्त्रों में रमणीयता की दृष्टि से अलङ्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है।

अलङ्कार शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी जा सकती है–''अलं करोति इति अलङ्कारः'' जिसे देखते ही सहृदयगण कह उठे 'अलम्' अर्थात् इससे अधिक सौन्दर्य अन्यत्र नहीं है, वही अलङ्कार है।

संकुचित अर्थ में अलङ्कारों को ''अलङ्करणम् अलङ्कारः'' अर्थात आभूषण ही अलङ्कार है, यह अर्थ लिया जाता है।

विस्तृत रूप में दण्डी ने काव्य के सभी शोभाधायक तत्त्वों को अलङ्कार कहा है–''काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलङ्कारान् प्रचक्षते''।

वामन ने भी अलङ्कार को इसी रूप में ग्रहण किया है– ''सौन्दर्यमलङ्कारः'' अर्थात् काव्य में सुन्दरता लाने वाले सभी तत्त्व अलङ्कार है।

अलङ्कारों का मूल आधार शब्द तथा अर्थ है इस आधार पर अलङ्कार तीन प्रकार के माने गये हैं –

''शब्दालङ्कार अर्थालङ्कार तथा उभयालङ्कार''

शब्दालङ्कारों की संख्या के विषय में सभी आचार्यों के मत अलग–अलग है। आचार्य मम्मट छः शब्दालङ्कार मानते हैं।

आचार्य विश्वनाथ सात शब्दालङ्कार मानते हैं। रूद्रट्ट ने पाँच माने हैं। दण्डी, भामह और वामन ने दो माने हैं।

आचार्य उद्भट के अनुसार शब्दालङ्कार चार हैं। आचार्य कवीन्द्र ने शब्दालंकारों की संख्या ग्यारह बतायी है। हम यहाँ पर सामान्यरूप से शब्दालङ्कारों का उल्लेख कर रहे हैं :–

वक्रोक्ति अलङ्कार

वक्रोक्ति अलङ्कार उसे कहते है जिसमें वक्ता कुछ और कहता है, परन्तु श्रोता द्वारा इसका अर्थ किसी और रूप में ले लिया जाता है।

आचार्य मम्मट ने वक्रोक्ति का लक्षण इस प्रकार दिया है –

शोधच्छात्र राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गङ्गानाथ झा परिसर इलाहाबाद

''यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।
श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।''[1]

अर्थात् जो वक्ता द्वारा अन्य प्रकार से अन्य अर्थ में कहा हुआ दूसरे बोद्धा या श्रोता के द्वारा श्लेष या काकु अर्थात् बोलने के लहजे से अन्य प्रकार से भिन्न अर्थ लगा लिया जाता है। वह वक्रोक्ति नामक शब्दालंकार होता है।

आचार्य विश्वनाथ ने वक्रोक्ति अलंङ्कार का लक्षण इस प्रकार दिया है –

अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यदि।
अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा।।''[2]

उदाहरण– **काले कोकिलवाचाले सहकारमनोहरे।**
कृतागसः परित्यागात्तस्याश्चेतो न दूयते।।[3]

इस श्लोक में अपराध करने वाले पति का नायिका द्वारा परित्याग कर दिये जाने पर नायक के आश्वासन के लिए यह उसकी सखी की उक्ति है।

अनुप्रास अलङ्कार :–

''वर्णसाम्यमनुप्रासः''[4]

अर्थात् वर्णों के समानता का नाम अनुप्रास है, जब एक ही वाक्य में एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति बार–बार या एक बार पायी जाये तो वहाँ पर अनुप्रास नामक अलङ्कार होता है।

अनुप्रासालङ्कार दो प्रकार का होता है–

वर्णानुप्रास तथा पादानुप्रास।

वर्णानुप्रास के दो भेद–छेकानुप्रास तथा वृत्यानुप्रास है।

पादानुप्रास का दूसरा नाम लाटानुप्रास है जो पांच प्रकार का होता है–

1. एक पद की आवृत्ति रूप
2. अनेक पदों की आवृत्ति रूप
3. एक समास में आवृत्ति
4. अनेक समासों में आवृत्ति
5. समास तथा असमास में आवृत्ति रूप।

आचार्य विश्वनाथ ने अनुप्रासालङ्कार का लक्षण इस प्रकार दिया है–

''अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।''[5]

अर्थात् स्वरों की विषमता होने पर भी काव्यों में पायी जाने वाली शब्दों की समता को अनुप्रास अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण–

''आदाय वकुलगन्धानन्धीकुर्वन् पदे पदे भ्रमरान्।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।।''[6]

यमक अलङ्कार –

जब एक ही शब्द यथाक्रम स्वरव्य×जन–संघात स्वरूप पुनः प्रयोग होता है तो यमकालङ्कार होता है, दोनो शब्दों के सार्थक होने पर भी अर्थ अलग–अलग होता है तथा यह भी आवश्यक नहीं कि दोनो पद सार्थक ही हो एक सार्थक तथा एक निरर्थक भी हो सकता है।

आचार्य मम्मट ने यमक अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार दिया है–

अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिर्यमकम्।[7]

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार लक्षण–

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्य×जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।[8]

उदाहरण–

नवपलाश–पलाशवनं पुरः स्फुटपराग–परागत–पंकजम्।
''मृदुल–तान्त–लतान्तमलोकयत्स सुरभिं सुमनोभरैः।।''[9]

शब्दों की पुनरावृत्ति के स्थान पर पदों की पुनरावृत्ति होने से यमक के कई भेद हो जाते हैं।

श्लेष अलङ्कार–

श्लेष का अर्थ है– चिपका हुआ, इस अलङ्कार में प्रयुक्त शब्द विशेष में कई अर्थ रहते हैं। दूसरे शब्दों में जब पंक्ति में एक शब्द के कई अर्थ होते हैं, तब वहाँ श्लेष अलङ्कार होता है।

आचार्य मम्मट ने श्लेष अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार दिया है–

''वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।''[10]

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने श्लेष अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार दिया है–

''श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
वर्ण प्रत्ययलिबनां–प्रकृत्योः पदयोरपि।
श्लेषाद्विभक्तिवचनभाषाणामष्टधा च सः।''[11]

उदाहरण– **''अयं सर्वाणि शास्त्राणि हृदि ज्ञेषु च वक्ष्यति।**
सामार्थ्यकृदमित्राणां मित्राणां च नृपात्मजः।।''

श्लेष अलङ्कार आठ प्रकार का होता है।[12]

चित्रालङ्कार–

जहाँ पर काव्य में वर्णों का उल्लेख इस प्रकार किया जाता है कि किसी चित्रविशेष की आकृति बन जाये तब वहाँ पर चित्रालङ्कार होता है। मम्मट ने इसका लक्षण इस प्रकार दिया है –

''तच्चित्रं यत्र वर्णानां खड्गाद्याकृति हेतुता।'' [13]

उदाहरण– **''सरला बहुलारम्भतरलालिवलारवा**
वारलाबहुलामन्दकरलाबहुलामला।''[14]

यह अलङ्कार वर्तमानकाल में प्रयोग में देखा जाता है केवल शब्दों का चमत्कार होने से इसे शब्दालङ्कार में गिना जाता है। इसमें खड्गाकृति, मुरजबन्ध, पद्मबन्ध, सर्वतोभद्र आदि प्रमुख हैं।

काव्यसाहित्य में अलङ्कारों का विशेष महत्त्व है। जिस प्रकार सुन्दर शरीर होने पर भी बिना आभूषण के शरीर की सुन्दरता में कुछ कमी बनी रहती है जैसे ही आभूषणों का प्रयोग कर दिया जाता है वैसे ही शरीर की सुन्दरता बढ़ जाती है। उसी प्रकार काव्यों में बिना अलङ्कारों के काव्य निर्जीव सा प्रतीत होता है। काव्य में अलङ्कार किसी न किसी रूप में अवश्य ही रहता है बिना अलङ्कारों के काव्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस प्रकार अलङ्कारों से काव्य की सुन्दरता बढ़ जाती है।

सन्दर्भ सूची –

1. काव्यप्रकाश (नवमोल्लास)का0–78
2. साहित्यदर्पण 10/9
3. साहित्यदर्पण 10/9
4. काव्यप्रकाश 9/सूत्र–103
5. साहित्यदर्पण 10/3
6. साहित्यदर्पण 10/3
7. काव्यप्रकाश 9/सूत्र–116
8. साहित्यदर्पण 10/8
9. साहित्यदर्पण 10/8
10. काव्यप्रकाश 9/सूत्र–118
11. साहित्यदर्पण 10/11
12. साहित्यदर्पण 10/11
13. काव्यप्रकाश 9/सूत्र–120
14. काव्यप्रकाश 9/287 उदा0